Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

चम्बा की पारंपरिक लोक गायन विधा कुंजड़ी–मल्हार के संवर्धन में भट्ट वंश का योगदान

Vinay Kumar[1] and Dr. Mritunjay Sharma[2]

1 Ph.D. Research Scholar, Department of Performing Arts (Music), H.P. University, Summerhill, Shimla
2 Assistant Professor, Department of Performing Arts (Music), H.P. University, Summerhill, Shimla

सार संक्षेपिका

चम्बयाली लोक संस्कृति केवल चम्बा जनपद में ही नहीं अपितु पूरे देश में अपनी पृथक पहचान रखती है। यहां विभिन्न गायन विधाएं प्रचलित हैं इनमें से कुंजड़ी–मल्हार भी एक है। इसे ऋतु गायन शैली कहते हैं। चम्बा जनपद में यह गायन सावन माह में 'कुंज' नामक पक्षी के आगमन पर शुरू होता है। कुंजड़ी–मल्हार गायन के संरक्षण–संवर्धन में चम्बा के भट्ट वंश का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। चम्बा रियासतकालीन जनपद रहा है। लगभग 16वीं शताब्दी से ही भट्ट वंश को कुंजड़ी–मल्हार गायन के प्रति राजाश्रय की प्राप्ति हुई तब से लेकर यह वंश (भट्ट) इस गायन का प्रचार–प्रसार वर्तमान समय में भी कर रहा है। कुंजड़ी–मल्हार गायन को भट्ट वंश के लोक गायक स्व. सरदार प्रेम सिंह जी द्वारा प्रसिद्धि मिली। आज भी यह वंश अपनी पारंपरिक वंशानुगत विधी से इस गायन को समाज में जीवित रखे हुए है। वर्तमान में इस वंश की चौथी पीढ़ी के लोक गायक श्री अजीत भट्ट इस गायन का संरक्षण–संवर्धन कर रहे हैं। अजीत भट्ट ने इस गायन विधा के प्रचार–प्रसार के लिए लगभग तीन से चार हजार स्कूली बच्चों को प्रशिक्षण दिया है। इसके अतिरिक्त अजीत भट्ट ने पिछले 30 वर्षों से जिला भाषा एवं संस्कृति विभाग चम्बा के सहयोग से इस गायन विधा को चम्बा जनपद में प्रसारित किया है। यह वंश पिछले 100 वर्षों से कुंजड़ी–मल्हार गायन विधा के विस्तार हेतु सक्रिय योगदान दे रहा है। वर्तमान में चम्बा में विभिन्न कुंजड़ी–मल्हार गायन समूह (पार्टी) इस गायन का प्रचार कर रहे हैं। जिनके नाम निम्नलिखित हैं। श्री अजीत भट्ट एण्ड पार्टी, श्री कुलदीप सिंह एण्ड पार्टी, शिव कुमार एण्ड पार्टी, संदीप कुमार एण्ड पार्टी। इन सभी समूहों में वंशानुगत पार्टी श्री अजीत भट्ट जी का योगदान उल्लेखनीय है।

बीज शब्दः कुंजड़ी–मल्हार, चम्बा का भट्ट वंश।

भूमिका

संगीत सदा से ही मानव सभ्यता का अभिन्न अंग रहा है। विभिन्न कलाओं में संगीत का स्थान सर्वोच्च है। संगीत का सम्बन्ध मनुष्य के सूक्ष्म मनोभावों को स्वतः ही व्यक्त करने से लगाया जा सकता है। संगीत मानव मन की आंतरिक भावनाओं की भाषा है। सभी ललित कलाओं में संगीत सर्वश्रेष्ठ कला है। क्योंकि इसकी उत्पत्ति का आधार नाद माना गया है। जो अति सूक्ष्म है। संगीत के विकसित होने में अनेक बाधाऐं भी आई हैं लेकिन फिर भी संगीत का विकास रुक नहीं पाया। वर्तमान में संगीत और अधिक विकसित हो रहा है। संगीत अत्यंत प्रभावशाली और भावनात्मक कला है जिसका मानव मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वर्तमान में संगीत एक रोचक विषय बन गया है। आज प्रत्येक व्यक्ति संगीत विषय को सीखना चाहता है। वस्तुतः गायन, वादन, नृत्य तीनों कलाओं का मिश्रण संगीत है। संगीत का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितनी कि मानवा सभ्यता। संगीत की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने अलग–अलग विचार दिये हैं। पण्डित अहोबल के अनुसार ब्रह्मा ने भरत को संगीत की शिक्षा दी तथा पण्डित दामोदर ने भी संगीत का आरम्भ ब्रह्मा को ही माना है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

इतिहास के कुछ समय पहले के पन्नों को खोलें तो पता चलता है कि एक वह समय था जब संगीत (गायन–वादन) को हीनता से देखा जाता था। लेकिन आज के युग में संगीत के प्रति दृष्टिकोण पूर्णतः बदल चुका है। आज संगीत कला ने वृहद् रूप धारण कर लिया है। कोई भी व्यक्ति संगीत के नियमों से भले ही परिचित हो या न हो लेकिन वह व्यक्ति अपने लोक संगीत से अपरिचित नहीं रहता है। क्योंकि लोक संगीत जनमानस के भोले–भाले भाव हैं और उनके संस्कारों में व्याप्त है। इसी दृष्टिकोण से लोक संगीत इतना प्रभावशाली और महत्वपूर्ण है।

चम्बा का लोक संगीत

चम्बा जनपद में लोक संगीत का जनरंजन की दृष्टि से सर्वोच्च स्थान है। चम्बा का लोक संगीत अति प्राचीन संगीत है। जिसका गायन कई सौ वर्षों से यथावत चलता आ रहा है। वर्तमान में संगीत का आधुनिकीकरण या मशीनीकरण हो चुका है। लेकिन चम्बा की लोक गायन शैलियों में आज भी पौराणिक लोक वाद्यों का ही इस्तेमाल होता है। चम्बा का लोक संगीत प्राचीन व ऐतिहासिक संगीत है जो आधुनिक युग में भी अपनी विशिष्ट परिधि के अन्तर्गत जीवन्त है।

चम्बा के लोक संगीत के अन्तर्गत प्राचीन गायन शैलियां जैसे मुसादा गायन गाथा, कुंजड़ी–मल्हार, बसोआं घुरेई गीत, सुकरात, एंचली गायन, विवाह गीत, ढोलरू गीत आदि गाये जाते हैं। इन सभी गायन शैलियों में यहां के लोक वाद्यों का ही प्रयोग किया जाता है जैसे काहल तुरहि, नरसिंगा, नागफनी अलगोजा, घड़ाथाली, नगाड़ा, ढोल, कणसी आदि। यहां का प्रत्येक व्यक्ति लोक संगीत से हृदयगत भावों से जुड़ा हुआ है। लोक संगीत की दृष्टि से चम्बा जनपद आज भी अद्वितीय व अनूठा है। आज भी यहां का लोक गायन ऋतुओं और विशेष समय से बंधा हुआ है। उदाहरण के लिए कुंजड़ी–मल्हार को मात्र सावन महीने में ही गाया जाता है। किसी भी समय गाने पर यहां के बुजुर्ग लोग इसे मना करते हैं। यहां का लोक संगीत आज भी आधुनिक प्रभाव से स्वतन्त्र है व अपनी विशिष्ट पौराणिकता को सहेजे हुए है। फिर चाहे वह मिंजर मेले में सर्वप्रथम गाया जाने वाला (ऋतु गीत) कुंजड़ी–मल्हार हो या पारंपरिक गायन गाथा मुसादा हो या बसाओ त्योहार से सम्बन्धित घुरेई गीत हो या माता

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

सुनयना (सूई) की याद में गाया जाने वाला गायन सुकरात हो। यह सब लोक गायन यहां चम्बा की अवर्चनीय संस्कृति के अटूट पहलू हैं।

चम्बा की लोक गायन शैली कुंजड़ी–मल्हार

चम्बा न केवल अपने प्राकृतिक सौंदर्य से प्रकृति प्रेमियों का मन मोहता है बल्कि अपनी ऐतिहासिक पारंपरिक समृद्ध लोक संस्कृति की विभिन्न विधाओं को अपने आंचल में समेटे हुए सबको अपनी और आकर्षित भी करता है। इन्हीं विभिन्न विधाओं में से एक लोक गायन विधा कुंजड़ी–मल्हार है। जो लोक संस्कृति विरासत व इतिहास की अमूल्य धरोहर है। चम्बा में पारंपरिक लोक संगीत का इतना अक्षम्य भंडार है जहां से कोई भी जिज्ञासु निराश नहीं होता है। चम्बा के लोक संगीत में अचम्भित शक्ति है, साथ ही यहां की विभिन्न लोक गायन शैलियां एकता के अनेक रंगों में रंगी हैं। यह गायन शैलियां लोक संगीत पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से आज भी गाई और सुनाई जाती हैं। कुंजड़ी–मल्हार इन्हीं गायन शैलियों का जीवन्त उदाहरण है। यह ऋतु गायन चम्बा जनपद में राजाओं के रियासत काल से होता चला आ रहा है। यह गायन इस जनपद के लोगों की धार्मिक, सामाजिक व पारंपरिक लोक संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। ऋतु गायन कुंजड़ी–मल्हार के लगभग 10 से 15 प्रकार के गीत गाये जाते हैं। उल्लेखनीय है कि इसमें एक कुंजड़ी प्रकार गीत है और बाकी सब मल्हारें गाई जाती हैं।

कुंजड़ी प्रकार– ''उड़ा–उड़ा मेरिये कुजड़ियों बरखा दे ध्याड़े
मेरे रामा जिन्देयां दे मेले''।

मल्हार प्रकार– ''घनियर गरजे प्यारा मेरा तरसे
आई ऋतु सावनी घनियर गरजे''।

कुंजड़ी–मल्हार गायन सावन माह के यौवन पर आने और प्राकृतिक प्रेमियों को आत्म विभोर करने में अहम भूमिका अदा करता है। साथ ही यह गायन लोक संस्कृति व सभ्यता व संस्कृति की अमूल्य विरासत है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

भटट् वंश का परिचय

भटट् वंश 16वीं शताब्दी में चम्बा जनपद में आए। इस वंश का काम भक्त रास आदि लीलाएं करना व गाना गाना था। इस वंश को राजाओं के रियासत काल में प्रशासन विभाग द्वारा एक अच्छे मंच की प्राप्ति हुई। वहीं से यह वंश गायन क्षेत्र में प्रचार में आया। विशेषतः यह वंश कुंजड़ी–मल्हार गायन के लिए जाना जाता है। अपितु यह वंश बसंत, होरी, घुरेई आदि गायन में भी पारंगत है। कुंजड़ी–मल्हार सावन महीने में गाया जाने वाला पारंपरिक लोक गायन है। यह लोक गायन मिंजर मेले के शुभारंभ में गाया जाता है। 16वीं शताब्दी में राजा पृथ्वी सिंह की कांगड़ा रियासत पर विजय हासिल करने पर उनके स्वागत में यह कुंजड़ी–मल्हार गायन यहां के भट्ट वंश के पूर्वजों द्वारा गाया गया था। तब से लेकर इसी परंपरा का निर्वहन यहां का भ्टट वंश कर रहा है। इस गायन को इस वंश के सदस्य लोक गायक स्वर्गीय सरदार प्रेम सिंह जी की देन कहा जाता है। सरदार प्रेम सिंह जी अपने समय के प्रसिद्ध कुंजड़ी–मल्हार के लोक गायक थे। यह भटट् वंश के रियासत कालीन गायक थे। इन गीतों के यह स्वयं गीतकार थे। वर्तमान में कुंजड़ी–मल्हार के संरक्षण संवर्धन में इसी भटट् वंश के श्री अजीत भटट् अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। पिछली चार पीढ़ियों से यह कुजंड़ी–मल्हार गायन घरानेदार गायकी के रूप में होता चला आ रहा है।

पूर्व सम्बन्धित शोध साहित्य

कुंजड़ी–मल्हार गायन विधा से सम्बन्धित शोध कार्य पूर्व में नहीं हुआ है। यह कार्य शोधार्थी द्वारा पहली बार हुआ है।

शोध प्रविधि

उद्देश्य

कुंजड़ी–मल्हार गायन में भट्ट वंश के योगदान का अध्ययन।

क्षेत्र

इस शोध कार्य को सम्पन्न करने के लिए क्षेत्र चम्बा की पारंपरिक लोक गायन विधा कुंजड़ी–मल्हार के संवर्धन में भट्ट वंश का योगदान पर ही केन्द्रित किया गया है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

शोध विधि

शोध कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण

शोध सम्बन्धित सामग्री को प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है तथा व्यक्तिगत साक्षात्कारों का प्रयोग किया गया है।

भटट् वंश का संगीत के क्षेत्र में योगदान

चम्बा का भट्ट वंश राजाओं के रियासत काल से गायन करने वाला वंश है। यह वंश पिछले 100 वर्षों से अधिक समय से कुंजड़ी–मल्हार के अतिरिक्त घुरेई, बसंत होरी, अन्य लोक गायन शैलियों को गाता आ रहा है। यह वंश अपनी वंशानुगत शैली के अनुसार अपने गायन को समाज में जिंदा रखे हुए है। कुजंड़ी–मल्हार की परंपरा को सहेजने व संवर्धन में इस वंश की चौथी पीढ़ी के सदस्य श्री अजीत भटट् जी अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। भाषा एवं संस्कृति विभाग की ओर से नॉर्थ जोन सिंगिंग प्रतियोगिता में आपने अपनी चम्बयाली संस्कृति विरासत से लोगों को रूबरू करवाया है। आप बताते हैं कि आपने 3000 से 4000 स्कूली बच्चों को इस कुंजड़ी–मल्हार लोक गायन का शिक्षण देकर बच्चों में इस गायन का बीजारोपण किया। यह वंश चम्बायाली संस्कृति विरासत को ऊँचा उठाने व इसके संवर्धन सरंक्षण में निरंतर सक्रिय योगदान दे रहा है। भट्ट वंश में कुंजड़ी–मल्हार, बसंत, होरीए घुरेई विवाह गीतो के पारंपरिक जानकार अपनी युवा पीढ़ी को भी यह गायन सीखाते हैं ताकि यह गायन शैलियां लुप्त होने से बच सकें व इन शैलियों का प्रचार–प्रसार भी हो सके। भटट् वंश इन लोक गायन शैलियों में मात्र चम्बायाली लोक वाद्यों का ही प्रयोग बहुतायत में करते हैं।

भटट् वंश लोक गायन शैलियों के प्रचार–प्रसार में शुरू से ही अतुलनीय योगदान देता आया है। भट्ट वंश का चम्बायाली विरासत और लोक संस्कृति सभ्यता के विकास व संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भट्ट वंश में गायक, वादक, नृतक तीनों ही वर्ग के कलाकार शामिल हैं। यूँ तो चम्बा में साल भर मेले, त्योहार, सामाजिक संस्कार, शादी विवाह आदि मांगलिक कार्य होते रहते हैं। इन सभी कार्यों में यह भटट् वंश सक्रिय रूप से अपनी भूमिका अदा करता है। उल्लेखनीय है कि चम्बा में राज्य स्तरीय मिंजर मेला का आयोजन बड़े विशाल रूप में किया जाता है। इस मिंजर मेले का शुभारंभ सबसे पहले भट्ट वंश के लोगो द्वारा कुंजड़ी–मल्हार के गायन से प्रारम्भ होता है। इस गायन में यहां के लोक वाद्यों की संगति की जाती है। सर्वप्रथम कुंजड़ी–मल्हार के गायन का सौभाग्य भट्ट वंश को 16वीं शताब्दी में राजा पृथ्वी सिंह के स्वागत के समय से प्राप्त है। सामाजिक व सांस्कृतिक स्तर पर यह उपलब्धि भट्ट वंश के लिए गौरवमयी है। भट्ट वंश के गायक, वादक चम्बा की विरासत, संस्कृति सभ्यता को ऊँचा उठाने और संरक्षण संवर्धन में व इसके प्रचार व प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इस वंश के कलाकारों द्वारा समाज में प्रचलित प्रतिवर्ष बसंत होरी घुरेई गान आदि शैलियों का गायन

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

यहां प्रचलित पारंपरिक लोक वाद्यों द्वारा किया जाता है। विशेष तौर पर कुंजड़ी–मल्हार जैसी लोक गायन शैली पर इस वंश के कलाकारों का प्रथम अधिपत्य है।

निष्कर्ष

चम्बा जनपद में प्रचलित गायन शैलियों के अन्तर्गत कुंजड़ी–मल्हार लोक गायन शैली का अध्ययन करने पर यह पाया गया कि इस गायन शैली का भट्ट वंश द्वारा ही मौलिक व पारंपरिक रूप से प्रचार–प्रसार व संरक्षण संवर्धन किया गया है। रियासत काल से ही यह वंश इस गायन शैली को सम्भाले हुए है चूंकि 16वीं शताब्दी में यह वंश चम्बा जनपद में अस्तित्व आया था तब से ही इस वंश के पूर्वज इस लोक गायकी को गाते आ रहे हैं। स्वर्गीय सरदार प्रेम सिंह जी इस लोक गायकी के प्रखर कलाकर थे। यह रियासत कालीन समय के कलाकर रहे हैं। आज इस कुंजड़ी–मल्हार लोक गायन के संरक्षण और संवर्धन में स्व. सरदार प्रेम सिंह जी के भतीजे श्री अजीत भट्ट जी अपना योगदान दे रहे हैं। आज भी इस भट्ट वंश के कलाकारों के पास कुंजड़ी–मल्हार गायन विधा की समस्त महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध व सुरक्षित है। इस प्रकार की समस्त जानकारी का होना इस लोक गायन विधा (कुंजड़ी–मल्हार) व लोक संस्कृति सभ्यता को सुरक्षित रखने के लिए परमावश्यक है।

संदर्भ

साक्षात्कार

श्री अजीत भट्ट, मुहल्ला धड़ोग तह. व जिला चम्बा हि. प्र.।
श्री संदीप कुमार, गांव व डाकघर भड़ियां तह. व जिला चम्बा हि. प्र.।
श्री सुधीर चौहान, मुहल्ला धड़ोग तह. व जिला चम्बा हि. प्र.।
श्रीमती लाम्बो देवी, मुहल्ला धड़ोग तह. व जिला चम्बा हि. प्र.।
श्री गुलशन पाल, गांव परेल तह. व जिला चम्बा हि. प्र.।
श्री रोशन लाल, रूणकोठी सामरा, तहसील भरमौर, जिला चम्बा. हि. प्र.।